



॥ श्री गायत्री यंत्र पूजा विधि ॥
॥ मङ्गल करनिं गायत्री सुखधाम ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री गायत्री यंत्र पूजा विधि ॥

गायत्री यंत्र का महत्व

श्री गायत्री यंत्र माता गायत्री की दिव्य शक्ति का प्रतीक माना जाता है। इसकी श्रद्धापूर्वक पूजा करने से बुद्धि, ज्ञान, आत्मबल, आध्यात्मिक उन्नति, मानसिक शांति तथा सकारात्मक ऊर्जा की प्राप्ति होती है। यह यंत्र घर या पूजा-स्थान में स्थापित करने से शुभ वातावरण और सात्त्विकता का संचार होता है।

पूजा के लिए आवश्यक सामग्री

श्री गायत्री यंत्र, माता गायत्री का चित्र या प्रतिमा, लाल या पीला वस्त्र
गंगाजल, रोली एवं कुमकुम, अक्षत (चावल), चंदन
लाल या पीले पुष्प, धूप एवं दीप, पंचामृत
नैवेद्य (फल, मिश्री या खीर), कलश, नारियल (वैकल्पिक)
घी का दीपक

स्थापना का शुभ समय

रविवार या गुरुवार विशेष शुभ माने जाते हैं।
वसंत पंचमी, गायत्री जयंती, गुरु पूर्णिमा तथा नवरात्रि में स्थापना अत्यंत
शुभ मानी जाती है।
प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त या सूर्योदय के बाद का समय श्रेष्ठ माना जाता है।

श्री गायत्री यंत्र स्थापना विधि

स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करें।
पूजा स्थान को गंगाजल से शुद्ध करें।
लाल या पीला वस्त्र बिछाकर उस पर गायत्री यंत्र स्थापित करें।
यंत्र को गंगाजल और पंचामृत से (यदि उपयुक्त हो) स्नान कराकर पुनः
स्वच्छ जल से शुद्ध करें और साफ कपड़े से पोंछ लें, यंत्र पर चंदन, रोली,
अक्षत एवं पुष्प अर्पित करें, धूप एवं घी का दीपक प्रज्वलित करें।

संकल्प

अपने दाहिने हाथ में जल, अक्षत और पुष्प लेकर श्रद्धापूर्वक संकल्प करें

—

"मैं (अपना नाम) श्रद्धा एवं भक्ति से श्री गायत्री माता की कृपा प्राप्ति, सद्बुद्धि, ज्ञान, आध्यात्मिक उन्नति तथा परिवार के सुख-समृद्धि के लिए श्री गायत्री यंत्र की पूजा करता/करती हूँ। माता गायत्री मेरी प्रार्थना स्वीकार करें।"

पूजन क्रम

आचमन एवं गणेश वंदना, गुरु का स्मरण, गायत्री माता का ध्यान।
यंत्र पर पुष्प अर्पित करें, धूप-दीप समर्पित करें, नैवेद्य अर्पित करें।
गायत्री मंत्र का जप करें, गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः।

तत्सवितुर्वरेण्यं।

भर्गो देवस्य धीमहि।

धियो यो नः प्रचोदयात्॥

जप संख्या: 11, 21, 51 या 108 बार।

गायत्री माता की प्रार्थना

हे वेदमाता गायत्री!

आप समस्त ज्ञान की अधिष्ठात्री, बुद्धि की दात्री एवं करुणामयी माता हैं।
हमारे मन, वचन और कर्म को पवित्र बनाइए।
हमें सत्य, धर्म, विवेक, ज्ञान और सदाचार के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दीजिए।

हमारे परिवार में सुख, शांति, आरोग्य और समृद्धि का वास हो।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

आरती

पूजन के अंत में श्री गायत्री माता की आरती करें।

पूजा के बाद

प्रसाद ग्रहण करें और परिवार में वितरित करें।
यंत्र को पूजा स्थान में स्वच्छ एवं ऊँचे स्थान पर रखें।

विशेष सावधानियाँ

यंत्र की पूजा सदैव स्वच्छता एवं श्रद्धा के साथ करें।

पूजा के समय मन को शांत एवं एकाग्र रखें।

यंत्र को अपवित्र स्थान पर न रखें।

यथासंभव सात्त्विक भोजन, सत्य आचरण और सद्ब्यवहार का पालन करें।

यदि किसी विशेष परंपरा के अनुसार यंत्र में प्राण-प्रतिष्ठा करानी हो, तो योग्य आचार्य के मार्गदर्शन में कराना उचित है।

माता गायत्री की कृपा से साधक को ज्ञान, विवेक, आत्मबल, मानसिक शांति तथा आध्यात्मिक प्रगति की प्राप्ति हो।

॥ ॐ श्री गायत्र्यै नमः ॥

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"